30–3–67 ओमशांति रात्रीक्लास

भारत ही प्राचीन था। देवी देवताओं का राज्य था। अभी तमोप्रधान बन गये हैं। भगवानोवाच मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप भस्म हो जावेंगे। तुम सतोप्रधान बन जावेंगे। प्रदर्शनी में तो समझाने के लिए 5–7 चित्र भी काफी है। इतने चित्र होते हुये भी लोग समझते नहीं हैं।वो ऐसे कहें कि समझाने वाले ठीक समझाते नहीं हैं। या तो कहें कि कोटों में कोउ, कोउ में कोउ ही निकलेगा। है बहुत सहज बातें। पहले2 मुख्य बात बाप की याद समझाती नहीं है और मुफ्त बैठ तिक2 करती रहती है।पहले पूछना चाहिए कि भगवान कौन है?वो तो जरूर बाप ही है ना। बाप से वर्सा मिलता है। बाप स्वर्ग का रचता है। अच्छी तरह प्रदर्शनी देखेंगे तो वो समझेंगे भी ;परंतु बाबा समझते हैं कि तिक2 बहुत करते हैं। गुडनाइट।

31–3–67 रात्रीक्लास– पहले2 महिमा है उंच ते उंच भगवान की। बाबा ने कहा भी है कि शिवबाबा की महिमा का (बोर्ड) बनाओ। उसमें पूरी महिमा दिखानी चाहिए। ज्ञान का सागर,सुख का सागर। मुख्य पहले2 सिद्ध करना है कि गीता का भगवान कृष्ण नहीं है ,शिवबाबा है। गीता ही भारत का शास्त्र है। तुम बच्चों को भी सारी समझानी इसी पर ही मिलती है। 84जन्म भी भारतवासी ही लेते हैं। हर एक धर्म वाले अपने2 धर्म की महिमा करते हैं। हिंदुओं को अपने धर्म का पता नहीं है। तुम हो ब्राह्मण। तुम जानते हो कि हम ही देवी देवता हैं। अब पतित बने हैं। तो समझाना चाहिए कि पतित–पावन एक ही बाप है।उनको ही याद करना चाहिए। लिबरेटर ,गाइड भी उन्हीं को कहा जाता है। दुःख से सारी दुनियां को लिबरेट कर ले जाते हैं। अब याद किसको करना चाहिए?पतित–पावन बाप को याद करने से ही पावन बनेंगे। मौत सामने खड़ी है। यह वो ही महाभारत लड़ाई है।उंच ते उंच बाप है। बाप से ही वर्सा लेना है। और कोई उपाय है नहीं।दिन–प्रतिदिन प्वाइंट्स बहुत आसान हो जावेगी।माया का तूफान बहुत लगता है जिसमें तो अच्छे2 गिर पड़ते हैं। ....फिर है काम। देहअभिमान से फिर और गंद निकलती है। (पहला) नम्बर (है देह)अभिमान की बीमारी। देहअभिमान छोड़ें तो सब बीमारियां निकल जावेंगी। फीमेल2 के नाम–रूप में फंस पड़ते हैं।आपस में ही थोड़े आशिक–माशूक बनना है। यह सब देहअभिमान की डर्टी....बीमारी है। देही अभिमान से प्योर हो जाते हैं।समाचार आता है कि फलाना गिर गया। बहुत बच्चे होंगे तो बहुतों के रोज समाचार आवेंगे कि बाबा यह गिर गया,मर गयां इतने फेल हो गये। देही अभिमानी बनेंगे तो इतना गिरेंगे नहीं। बॉम्बे में निर्मला डॉक्टर के सेंटर पर कुमारियों को अच्छी ट्रेनिंग मिल सकती है। एक टीचर अच्छी हो जो उनको सिखाती रहे। आसार अच्छे देखकर कुमारियां को लेना है। आजकल तो गरीब लोग तो झट दे देंगे। खर्चे से छूट जाते हैं। ऐसी को भी नहीं लेना है कि जो फिर माथा खा लेवे। तंग कर देवे। बाबा के हुक्म बिना कोई भी बच्ची को लेना नहीं है। बहुत जांच करनी है। शुरू की बातें तो और ही थीं। बहुत आये ,फिर कितने बच्चे रह गये। कितने टूट पड़े। दूसरा बाबा समझाते हैं कि यहां कब भी आंखें बंद करके नहीं बैठो। भक्तिमार्ग में अक्सर करके आंखें बंद करते हैं। यहां तो आंखें खुली रहनी चाहिए। तुमको तो शेरों मुआफिक रहना है। गर्दन उंची करके बैठना है। गर्दन नीचे करके बैठने से कुबड़े हो जाते हैं।बाप कहते हैं मैं अभी आकर के इनके बाजू में बैठता हूँ। सिखलाता तो तुमको हूँ।साथ2 यह भी सीख जाते हैं।इनकी आत्मा भी (सुनती)है।यह भी एक वंडर है।यह सबसे नजदीक है। इसलिए जल्दी सुन जाते हैं। मैंने बोला और इन्होंने सुना। तुम भी सुनते हो। फिर हर एक की धारणा अपनी2 है। एक चित्र से कोई समझा नहीं सकते हैं। यह अपना विचार–सागर–मंथन कर बतावेंगे। यह बाबा भी माना शिवबाबा भी कहते हैं कि यह प्वाइंट मैंने तो सुनाया ही नहीं है।इसने अपना सुनाया है। सुनते एक हैं मगर फिर बोली सबकी अपनी2 होती है।कोई किस प्रकार से ,कोई किस प्रकार .....।अच्छा, कदम2 पर श्रीमत पर चलने वाले सिकीलधों को यादप्यार और गुडनाइट